7

आया कहाँ से, कहाँ है जाना ?

आया कहाँ से, कहाँ है जाना ?
ढूंढ ले ठिकाना चेतन ! ढूंढ ले ठिकाना। सब कुछ तो जाना,
निज को न जाना ?
कैसा ज्ञानधारी तूने, आपा न पहचाना ।। टेक ।।

इक दिन तेरा गोरा तन ये, माटी में मिल जायेगा ।
कुटुम्ब कबीला खड़ा रहेगा, कोई बचा न पायेगा।
नहीं चलेगा, कोई वहाना, ढूंढ ले ठिकाना चेतन... ।।1 ।।

बाहर सुख को खोज रहा है, क्यों बनता दीवाना रे।
आतम ही सुख धाम है चेतन, निज को भूल न जाना रे।
सारे सुखों का ये है खजाना, ढूंढ ले ठिकाना चेतन... ।।2।।

जब तक तन में सांस है चलती, सब सुझको अपनायेंगे ।
जब न रहेंगे प्राण ये तन में, देख इसे घबड़ायेंगे ।
कहीं तो तुझको, पड़ेगा जाना, ढूंढ ले ठिकाना चेतन...।।3।।

धन दौलत और रूप खजाना, पड़ा यहीं रह जायेगा।
दौलत के दीवानों सुन लो, कुछ भी साथ न जायेगा।
आया अकेला, अकेले ही जाना, ढूंढ ले ठिकाना चेतन... ।।4।।

सद्गुरु जगा रहे हैं चेतन, सुन भव से तिर जायेगा ।
सम्यक्दर्शन ज्ञान से चेतन, दुःख सारा मिट जायेगा ।
सच्चे सुखों का यह है खजाना, ढूंढ ले ठिकाना चेतन....।।5।।

हे चेतन! तुम किस पर्याय से आए हो और तुम्हें किस पर्याय में जाना है ? तुम अनंत काल से भटक रहे हो, अब अपना स्थाई ठिकाना ढूंढ लो। तुमने सारी दुनिया को तो जाना परंतु अपनी आत्मा को नहीं जाना। तू कैसा ज्ञान स्वरूपी आत्मा है जो स्वयं की पहचान नहीं कर पाया ॥टेक॥

जिस शरीर पर तू इतना घमंड करता है तेरा यह गोरा शरीर एक दिन मिट्टी में मिलकर नष्ट हो जाएगा और सारा कुटुंब परिवार खड़ा होकर देखता रहेगा, परंतु कोई तुम्हें बचाने में समर्थ नहीं होगा। उस समय तेरा कोई बहाना काम नहीं आएगा इसलिए अपना स्थाई निवास ढूंढ ले ॥1॥

हे चेतन! तू पर द्रव्यों में ममत्व परिणाम करके उनमें ही सुख की खोज कर रहा है लेकिन तू यह नहीं जानतें कि तेरा आत्मा ही सुख का भंडार है इसलिए अपनी आत्मा को कभी नहीं भूलना, यह सारे सुख देने वाला है इसलिए अपना स्थाई ठिकाना ढूंढ ले ॥2॥

हे चेतन! जब तक इस शरीर में सांस चलती रहेगी तब तक परिवार कुटुंब वाले तुझसे प्रेम करेंगे परंतु जिस दिन इस शरीर से प्राण निकल जाएंगे उस दिन यही परिवार कुटुंब वाले इस मृतक शरीर को देखकर के घबराएंगे। हे चेतन! तुझे इस पर्याय के बाद कहीं तो जाना ही है इसलिए अपना शाश्वत स्थान ढूंढ ले। ॥3॥

हे चेतन! तू जिस धन दौलत और रूप पर घमंड करता हैं यह मृत्यु के बाद यहीं रह जाएगा। धन के पीछे अपना जीवन बरबाद करने वालो सुनो ! तुम्हारे साथ मृत्यु के बाद एक पैसा भी नहीं जाने वाला तुम अकेले ही आए हो और अकेले ही जाओगे इसलिए अपना स्थाई ठिकाना ढूंढ ले ॥4॥

हे चेतन! सच्चे गुरु हमें जगाने आए हैं तो यदि इनकी बात को सुनकर धारण करेगा तो संसार सागर से पार हो जाएगा और तुम सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान प्राप्त करोगे, इससे संसार का दुख समाप्त हो जाएगा। सच्चे सुख का रत्नत्रय ही मार्ग है इसलिए अपना स्थाई ठिकाना ढूंढ ले ॥5॥